

● पूजा-पाठ...

एक खास दीपक

हिंदू धर्म के अनुसार, रविवार की शाम घर के मुख्य द्वार यानी मेनडोर पर सफाई करके एक खास दीपक जलाने से घर में सुख-समृद्धि बने रहने की मान्यता है। लेकिन, आखिर रविवार की शाम ही सरसों के तेल का दीया जलाना इतना असरदार क्यों माना गया है? और इसे जलाने का सही नियम क्या है। आइए जानते हैं मां लक्ष्मी की कृपा पाने का यह आसान और अचूक उपाय।

► धार्मिक परंपराओं में सरसों के तेल से दीपक जलाने का विशेष महत्व बताया गया है। कई जगह शनिवार के साथ-साथ दूसरे अवसरों पर भी सरसों के तेल का दीपक जलाने की परंपरा देखने को मिलती है। रविवार की शाम मुख्य द्वार पर सरसों के तेल का दीपक जलाने को भी कुछ



मान्यताओं में घर से नकारात्मकता दूर करने और सकारात्मक वातावरण बनाए रखने से जोड़ा जाता है।

► धार्मिक मान्यता के अनुसार माता लक्ष्मी को स्वच्छता और शुभता से जोड़ा जाता है। इसी वजह से घर को साफ रखने और पूजा स्थान के साथ मुख्य द्वार को भी सही से रखने पर जोर दिया जाता है। मान्यता है कि जहां साफ-सफाई और सकारात्मक वातावरण होता है, वहां माता लक्ष्मी का वास बना रहता है। रविवार की शाम मुख्य द्वार की सफाई करने के बाद दीपक जलाने की परंपरा भी इसी भावना से जुड़ी मानी जाती है।

► अगर आप इस परंपरा को अपने घर में अपनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले मुख्य द्वार और उसके आसपास की जगह को साफ कर लें। इसके बाद एक साफ दीपक में सरसों का तेल डालकर दीपक जला सकते हैं। दीपक को मुख्य द्वार के पास सुरक्षित जगह पर रखें, ताकि हवा या आने-जाने से वह गिर न जाए। दीपक जलाते समय भगवान का ध्यान करके सुख-शांति और समृद्धि की प्रार्थना की जा सकती है।

► रविवार की शाम को रोशन मुख्य द्वार देखकर मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और घर में धन-धान्य का भंडार भरती हैं।

► यदि लंबे समय से रुका हुआ पैसा नहीं मिल रहा है या फिजूलखर्ची ज्यादा हो रही है, तो यह उपाय आर्थिक रुकावटों को दूर करता है।

● वास्तु...

घर की बालकनी



घर की बालकनी वह जगह होती है जहां हम सुबह की ताजा धूप और शाम की ठंडी हवा का आनंद लेते हैं। वास्तु के अनुसार घर की बालकनी के जरिए हमारे जीवन में सकारात्मकता भी आती है। ऐसे में बालकनी से जुड़े वास्तु नियमों का पालन भी हमको अवश्य करना चाहिए। वास्तु के अनुसार, घर की बालकनी में कुछ चीजों को रखने से बचना चाहिए नहीं तो घर का माहौल खराब हो सकता है।

►► **बालकनी में भूलकर भी न रखें कांटेदार पौधे-**कई लोग अपने घर की बालकनी में सजावट करने के लिए कैक्टस जैसे कांटेदार पौधे लगा देते हैं। वास्तु की मानें तो घर की ऊर्जा के लिए बालकनी में कांटेदार पौधों का होना अच्छा नहीं है। बालकनी में रखे कांटेदार पौधे घर में नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ा सकते हैं और परिवार के लोगों के बीच मनमुटाव हो सकता है। इसके साथ ही कांटेदार पौधे आर्थिक हानि का कारण भी बन सकते हैं। तुलसी, मनी प्लांट जैसे पौधों को बालकनी में रखना शुभ माना जाता है।

►► **बालकनी में न रखें जूते-चप्पल** -बालकनी में आपको शू-रैक और पुराने जूते चप्पल भी नहीं रखने चाहिए। ऐसा करने से सकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश नहीं कर पाती, साथ ही देवी-देवता भी नाराज हो सकते हैं। बालकनी में रखे जूते चप्पल करियर में रुकावटों का कारण भी बन सकते हैं। इसकी वजह से शनि और राहु-केतु का प्रभाव भी आपके जीवन पर बढ़ सकता है।

►► **टूटी-फूटी चीजें और कूड़ा बालकनी में रखने से बचें-**कई लोगों की आदत होती है कि वो टूटी-फूटी और काम में न आने वाली चीजों को बालकनी में रख देते हैं। वास्तु की मानें तो ऐसा करना गलत है। टूटी-फूटी चीजें अगर आप बालकनी में रखते हैं तो राहु के प्रकोप का आपको सामना करना पड़ सकता है। आपके बने-बनाए काम बिगड़ सकते हैं और साथ ही मानसिक रूप से भी आप परेशान हो सकते हैं। इसके साथ ही कूड़ा भी बालकनी में रखने से हमेशा बचना चाहिए। आपकी बालकनी में भी अगर कूड़ा या टूटी हुई चीजें रखी हैं तो उन्हें तुरंत बाहर आपको कर देना चाहिए।

►► **बालकनी में न रखें भारी फर्नीचर-**बालकनी में भारी फर्नीचर जैसे सोफा, टेबल आदि रखने से भी आपको बचना चाहिए। खासकर बालकनी की उत्तर और पूर्व दिशा में तो भारी फर्नीचर भूलकर भी न रखें। भारी फर्नीचर बालकनी में रखने से धन से जुड़ी समस्याओं का सामना आपको करना पड़ सकता है।

पितरों की आत्मा की शांति और तृप्ति के लिए इस दौरान पिंडदान, तर्पण और श्राद्ध कर्म करने की परंपरा है।

मान्यता है कि विधि-विधान से किए गए इन कर्मों से पूर्वजों को शांति मिलती है और उनका आशीर्वाद परिवार पर बना रहता है।

पितृ पक्ष के दौरान लोग अपने पूर्वजों का श्राद्ध और पिंडदान करने के लिए देश के प्रमुख धार्मिक स्थलों पर जाते हैं। भारत में कई ऐसे पवित्र स्थान हैं, जहां पिंडदान और तर्पण का विशेष धार्मिक महत्व माना जाता है...

पितरों का श्राद्ध और तर्पण इन जगहों पर करना होगा शुभ

हिन्दू पंचांग के अनुसार आश्विन माह पितरों को समर्पित होता है हिन्दू धर्म में पितरों का विशेष महत्व होता है। इस साल 26 सितंबर से पितृ पक्ष की शुरुआत हो रही है और 10 अक्टूबर को खत्म हो जाएंगे। इन दिनों मुख्य रूप से पिंडदान किया जाता है। पितरों की आत्मा की शांति और तृप्ति के लिए इस दौरान पिंडदान, तर्पण और श्राद्ध कर्म करने की परंपरा है। मान्यता है कि विधि-विधान से किए गए इन कर्मों से पूर्वजों को शांति मिलती है और उनका आशीर्वाद परिवार पर बना रहता है। पितृ पक्ष के दौरान लोग अपने पूर्वजों का श्राद्ध और पिंडदान करने के लिए देश के प्रमुख धार्मिक स्थलों पर जाते हैं। भारत में कई ऐसे पवित्र स्थान हैं, जहां पिंडदान और तर्पण का विशेष धार्मिक महत्व माना जाता है।

● **गया** -गया में पितरों का पिंडदान करने का विशेष महत्व है। बिहार की राजधानी पटना से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर फल्गु नदी के तट पर गया बसा हुआ है। पितृ पक्ष के दौरान यहां हजारों की संख्या में लोग अपने पितरों का पिण्डदान करते हैं। ऐसी मान्यता है कि यदि इस स्थान पर पिण्डदान किया जाय तो स्वर्ग मिलता है।

● **इलाहाबाद** -प्रयाग को सभी तीर्थों में प्रमुख स्थान माना जाता है यहां पर तीन नदिया गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। पितृपक्ष में प्रयाग का विशेष स्थान है माना जाता है भगवान राम ने अपने पितरों का श्राद्ध यहीं पर किया था जिसके कारण इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। पितृपक्ष में बड़ी संख्या में लोग यहां पर अपने पूर्वजो को श्राद्ध देने आते है।

● **बद्रीनाथ**-बद्रीनाथ भारत के चार प्रमुख धामों में एक है। यह स्थान भगवान विष्णु का है जहां पर विराजते है। बद्रीनाथ के ब्रह्माकपाल क्षेत्र में तीर्थयात्री अपने पितरों का आत्मा का शांति के लिए पिंडदान करते हैं। मान्यता है यही पर पाण्डवों ने भी अपने पितरों का पिंडदान किया था।

● **सिद्धनाथ मध्य प्रदेश**-यह स्थान उज्जैन में शिप्रा नदी के किनारे है यहां पर भी पितरों को श्राद्ध अर्पित करते है। ऐसी मान्यता है कि इसी स्थान पर एक वटवृक्ष है जिसे माता पार्वती ने अपने हाथो से स्वयं लगाया था। पितर पक्ष

में बड़ी संख्या में लोग इस स्थान पर अपने पितरों को श्राद्ध देते हैं।

● **काशी** -पितरों को प्रेत बाधाओं से मुक्ति दिलाने के लिए काशी में श्राद्ध व पिंडदान किया जाता है। सात्विक, राजस, तामस- ये तीन तरह की प्रेत आत्माएं मानी जाती हैं और इन प्रेत योनियों से मुक्ति के लिए देश भर में सिर्फ काशी के पिशाच मोचन कुण्ड पर ही मिट्टी के तीन कलश की स्थापना की जाती है और कलश पर भगवान शंकर, ब्रह्मा और विष्णु के प्रतीक के रूप में काले, लाल और सफेद रंग के झंडे लगाए जाते हैं। इसके बाद श्राद्ध कार्य किया जाता है। यहां श्राद्ध करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है, इसीलिए धर्म और अध्यात्म की नगरी कहे जाने वाली काशी को मोक्ष की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। काशी में श्राद्ध करने वाले के घर में हमेशा खुशियों का आगमन बना रहता है।

● **पिण्डारक गुजरात**-गुजरात के द्वारिका से 30 किलोमीटर का दूरी पर पिण्डारक स्थान है यहां पर एक नदी है जहां पर श्राद्ध कर्म करने के बाद नदी मे पिण्ड डालते है और अपने पितरों की आत्मा की शान्ति के लिए श्राद्ध आदि कर्म करते हैं

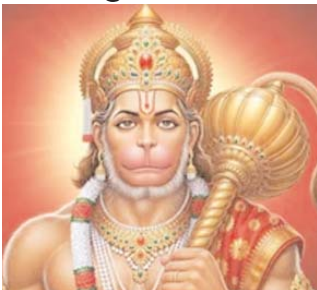
● **हरिद्वार** -हरिद्वार को 'मोक्ष का द्वार' माना जाता है। माना जाता है कि यहां पर गंगा नदी के तट पर धार्मिक अनुष्ठानों से पूर्वजों की आत्मा सीधे बैकुंठ धाम को चली जाती है। ऐसा माना जाता है कि यहां पर अगर आप पिंडदान करते हैं, तो आत्मा जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाती है। माना जाता है कि यहां पर भगवान राम ने भी अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए आकर पिंडदान किया था और राजा भगीरथ के 60,000 पूर्वजों की मुक्ति के लिए इसी स्थान पर पिंडदान किया था. आप नारायणी शिला मंदिर, कुशावर्त घाट, हर की पौड़ी (ब्रह्मकुंड) और कनखल के घाट पर पिंडदान कर सकते हैं।

● **कुरुक्षेत्र**-हरियाणा के कुरुक्षेत्र में पिहोवा तीर्थ पर अकाल मृत्यु वालों का श्राद्ध करना सबसे उत्तम माना जाता है और खासकर कि अमावस्या के दिन । जिनकी मृत्यु समय से पहले ही किसी एक्सीडेंट में या किसी शस्त्राघात से हो गई हो, उनका श्राद्ध यहां किया जाता है।

■ पं. नित्यानंद

● मंत्र7...

हनुमान जी



हनुमान जी को प्रसन्न करने के कई तरीके हैं। कोई उन्हें राम नाम के जाप से प्रसन्न करने की कोशिश करता है, तो कोई हनुमान चालीसा के नियमित पाठ से, लेकिन कई बार इतना कुछ करने के बाद भी मन हनुमान जी में नहीं लगता है। रामचरित मानस में बताया गया है कि, भगवान हनुमान जी के करीब जाने के लिए सबसे पहले आप जो उनको दे सकते हैं, उससे शुरू करें। सबसे पहले शांत मन से कुछ मिनट या घंटे उनके लिए निकालें। किसी भी तरह की भारी-भरकम चालीसा या भजन के बजाय अपनी शुरुआत एक सरल प्रार्थना से करें। रामचरितमानस में हनुमान जी को प्रसन्न करने का सबसे कारगर उपाय नियमित रूप से हनुमान चालीसा का पाठ करना बताया गया है। हनुमान चालीसा श्लोकों का एक भजन जो उनकी महानता, वीरता, शक्ति और भक्ति का गुणगान करता है। माना जाता है कि जो भी व्यक्ति रोजाना इसका सच्चे मन से पाठ करता है, उसे जीवन में शांति, सौभाग्य और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

● भगवान की तस्वीरें...

घर की दीवारों और पूजा स्थल में लगाई गई भगवान की तस्वीरें, धार्मिक कैलेंडर या किसी भी देवी-देवता की छवि समय के साथ खराब होने लगती है। ऐसे में पुरानी हो चुकी तस्वीरों को दो तरह से निपटारा करना चाहिए। सबसे पहले तो गलने वाली चीजें जैसे कागज की तस्वीरें जल में प्रवाहित कर दें। अगर उनपर पहले से कोई फ्रेम लगा है, तो उसे फ्रेम से हटाकर बहते जल में प्रवाहित करें। जबकि जो चीजें न गलने वाली, जैसे-लकड़ी या कपड़े से बनी तस्वीर को अग्नि में जला दें।